

बौद्ध शिक्षा

बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था : का भारतीय शिक्षा के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि सूत्र युग के पतन के बाद 500 बी से लेकर 1200 एडी तक बहुत युग रहा तथा शिक्षा प्रणाली भी बौद्ध धर्म के सिद्धांतों से काफी प्रभावित हुई बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए विकसित की गई शिक्षा पद्धति को बौद्ध शिक्षा कहा गया इस शिक्षा पर वैदिक कालीन शिक्षा का प्रभाव बना रहा।

1 बौद्ध कालीन शिक्षा की विशेषताएं

2 शिक्षा का उद्देश्य

3 पबबजा संस्कार

3 श्रमण की दिनचर्या

4 शिक्षा व्यवस्था शिक्षा की विधि

5 पाठ्यक्रम

6 गुरुशिष्य संबंध

7 उपसंपदा संस्कार

7 वित्त व्यवस्था

8 शिक्षा प्राप्ति का अधिकार

9 स्त्री शिक्षा

बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था : बौद्ध धर्म का विकास मठों में हुआ था यह मठ न केवल धर्म के बल्कि शिक्षा के भी केंद्र थे और शिक्षा देने का कार्य उनमें निवास करने वाले भिक्षुओं द्वारा किया जाता था।

प्राचीन काल के समान बौद्ध काल में भी केवल प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा की व्यवस्था थी और शिक्षा के यही दो स्तर थे।

जातक कथाओं से ज्ञात होता है कि, प्राथमिक शिक्षा केवल बौद्ध धर्मावलंबियों को ही नहीं बल्कि सब जातियों के लिए उपलब्ध थी। यह शिक्षा मठों में दी जाती थी और आरंभ से पूर्ण तक धार्मिक थीं। सातवीं शताब्दी में आने वाली चीनी यात्री ह्वेनसांग के अनुसार प्राथमिक शिक्षा आरंभ करने की आयु 6 वर्ष की थी। इस शिक्षा की अवधि 6 वर्ष की ही थी।

सातवीं शताब्दी में आने वाले चीनी यात्री हेनसांग ने प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रम का वर्णन इस प्रकार किया है कि, बालकों को प्रथम 6 माह में 'सिद्धिरस्तु' नामक बालपोथी पढ़नी पड़ती थी। इस पोथी में 12 अध्याय और वर्णमाला के 49 अक्षर थे। 6 माह के बाद बालकों को निम्न पांच विधाओं की शिक्षा दी जाती थी ।

शब्द विद्या
तर्क शिक्षा विद्या
चिकित्सा विद्या
अध्यात्म विद्या
शिल्प स्थान विद्या

शिक्षण विधि

अल्बर्ट फिटके के अनुसार सामान्य शिक्षण विधि इस प्रकार थी शिक्षक लकड़ी की तख्ती पर वर्णमाला के अक्षरों को लिखना था और उनका उच्चारण करता था बालक उसके उच्चारण का अनुकरण करते थे पाठ्य विषय के शिक्षक का अध्यापक आगे आगे बोलता था और बालक उसके कथन को उसे समय तक दोहराते थे जब तक उनको पाठ्य विषय याद नहीं हो जाता था इस प्रकार शिक्षण विधि पूर्णतया मौखिक थी। शिक्षा का माध्यम जनसाधारण की भाषा पाली थी।

उच्च शिक्षा

मठों में उच्च शिक्षा दी जाती थी मठों में दी जानी वाला उच्च शिक्षा अपनी दक्षता से कोरिया चीन तिब्बत और जावा जैसे सुदूर देशों के छात्रों को आकर्षित करके भारत की

प्रवेश एवं आयु

इसमें प्रवेश करने की अवधि इसमें प्रवेश करने का आयु 12 वर्ष था अध्ययन की अवधि 12 वर्ष की थी ताकि छात्र प्राचीन परंपरा के अनुसार 25 वर्ष की आयु में किसी व्यवसाय को ग्रहण करके गृहस्थ के रूप में अपना जीवन व्यतीत कर सके पाठ्यक्रम दो भागों में विभक्त था।

1 धार्मिक और

2 लौकिक धार्मिक

1 धार्मिक पाठ्यक्रम भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए था। उनको धार्मिक और जीवन पयोगी दोनों प्रकार की शिक्षा दी जाती थी। मुख्य धार्मिक विषय थे, बौद्ध धर्म, साहित्य, त्रिपिटक, विनय पिटक, धम्म पिटक आदि जीवनपयोगी विषयों में मठ और विहारों के निर्माण और व्यावहारिक ज्ञान दान की संपत्ति का प्रबंध और हिसाब किताब आदि सम्मिलित थे।

2 लौकिक पाठ्यक्रम साधारण नागरिकों के लिए था, उनके पाठ्यक्रम में निम्न विषय थे, धाम, दर्शन, साहित्य, तर्कशास्त्र, न्याय शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, आदि

शिक्षा का माध्यम सामान्य रूप से पाली भाषा थी

बौद्ध काल में शिक्षा के मुख्य केंद्र एवं बिहार थे। इन से छात्रावास संबद्ध थे। छात्रों को निशुल्क शिक्षा भोजन वस्त्र आदि की सुविधा थी। विभिन्न विश्वविद्यालय विभिन्न शिक्षा के केंद्र थे। जो बाद में विश्वविद्यालय के नाम पर ख्याति प्राप्त की।

जैसे नदिया विश्वविद्यालय

बल्लभी विश्वविद्यालय

विक्रमशिला विश्वविद्यालय

तक्षशिला विश्वविद्यालय

नालंदा विश्वविद्यालय

आधुनिक शिक्षा के ग्रहणीय तत्व

बौद्ध कालीन शिक्षा का भारत में लोग हो चुका है, तथापि इसके कुछ तत्व आधुनिक भारतीय शिक्षा के लिए ग्रहणीय हैं।

जैसे

1 छात्रों का जीवन

2 छात्रों के अधिकार

3 अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा का केंद्र

4 शिक्षा संस्थानों का जनतांत्रिक संगठन etc.